



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब एक्सप्रेस	15-12-22	2	1-6

बदलते मौसम में सरसों की फसल में हो सकती है बीमारियां, सावधानियां बरतें किसान

हिसार, 14 दिसम्बर (ब्यूरो): दिसम्बर माह में मौसम में कई प्रकार के बदलाव देखने को मिल रहे हैं। खासतौर से इन दिनों में रात्रि को ठंड पड़ रही है जबकि दोपहर का तापमान में अभी खास गिरावट देखने को नहीं मिल रही है। इस कारण से बदलते मौसम में सरसों में कई प्रकार की बीमारियां हो सकती है।

तिलहन विभाग के चादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान हकूबि द्वारा सिंक्रोफासिफ किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

उल्लेखनीय है कि सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों सर्वांगी फसलों के उदाहरण तौरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अयोधी व पखेती सरसों की फसल में कई प्रकार



सफेद रतुआ का फाइल फोटो, तनागलन का फाइल फोटो व अल्टरनेरिया ब्लाइट का फाइल फोटो।

पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल की 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं।

ये हैं सरसों की मुख्य विमारी और उनके लक्षण अल्टरनेरिया ब्लाइट

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है।

कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू
इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ
सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेहंग आकार के हो जाते हैं जिसे

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

चादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें।

इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाक्सिस्टन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 45 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सूमाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	15-12-22	4	6-8

अच्छे उत्पादन के लिए दिसंबर के तीसरे, चौथे सप्ताह में करें टमाटर, प्याज व मिर्च की बिजाई सब्जियों की फसलों को पाले से बचाने के लिए देखभाल करना जरूरी

भास्कर न्यूज़ | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिकों के अनुसार, दिसंबर माह के तीसरे और चौथे सप्ताह में जहां रबी की प्याज, टमाटर, बैंगन और मिर्च की फसल को इस माह भी उगाया जा सकता है। वहीं, उगाई गई आलू और अन्य सब्जियों फसलों की देखभाल बहुत ही जरूरी है। फसलों को आगामी दिनों में पाले से बचाने के लिए पॉलिथीन का भी प्रयोग किया जा सकता है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार (एचएयू) के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने बताया कि दिसंबर के तीसरे और चौथे सप्ताह में फसलों को अधिक देखभाल की जरूरत होती है। थोड़ी देखभाल कर किसान फसलों को रोगग्रस्त होने से भी बचा सकता है। उन्होंने बताया कि सर्दी में आलू की फसल को रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक दवाओं के प्रयोग कर नियंत्रण किया जा सकता है।

फसलों में तैयारी व बचाव के लिए यह करें किसान

प्याज: प्याज को पनीरी इस



माह तैयार हो जाएगी। ऐसे में समय से खेत को तैयार करें। रोपाई का

सबसे अच्छा समय दिसंबर के अंतिम सप्ताह है।

आलू: खेत की सिंचाई करें तथा



हानिकारक कीटों व बीमारियों से रक्षा करें। ध्यान रखें कि आलूओं की खुदाई से कम

से कम तीन सप्ताह पूर्व दवाओं का प्रयोग बंद कर दें।



टमाटर: नर्सरी में की गई बिजाई की देखभाल करें।

इस माह भी नर्सरी में बिजाई की जा सकती है। बिजाई से पहले 2.5 ग्राम कैप्टान या थाइरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज का उपचार करें। कम तापमान होने के कारण अंकुरण तथा पौध को बढ़वार धीमी होगी।

बैंगन: नर्सरी में पौध की



देखभाल करें। इस माह भी (यदि बिजाई पहले नहीं की है) बिजाई की

जा सकती है। पौधे को पाले से बचाने का प्रबंध करें।

मिर्च: नर्सरी में बिजाई दिसंबर के



अंतिम फखवाड़े में की जा सकती है। ठंड होने से बीजों को उगने में अधिक समय

लगेगा। नर्सरी में पौध को पाले से बचाना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

उमर उजाला

दिनांक

15-12-22

पृष्ठ संख्या

2

कॉलम

2-6

बीमारी से बचाने के लिए फसल में शाम को करें दवा का छिड़काव

एचएयू के कुलपति ने सरसों की बीमारियों के प्रति किसानों को सचेत किया
माई सिटी रिपोर्ट

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) प्रशासन ने सरसों की फसलों में लगने वाले रोग को लेकर किसानों को सतर्क किया है। अधिकारियों ने बताया कि रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात में सबसे अधिक क्षेत्र में सरसों की बिजाई होती है। तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों में इस समय बीमारी आ सकती है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव शाम 4 बजे से करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। उन्होंने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके कारण इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंद नाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारियाँ और उनके लक्षण



सफेद रतुआ। संकेत



अल्टरनेरिया ब्लाइट। संकेत

■ **अल्टरनेरिया ब्लाइट** : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

■ **फुलिया या डाउनी मिल्डू** : इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

■ **सफेद रतुआ** : सरसों की इस बीमारी

में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेडोंग आकार के हो जाते हैं, जिसे स्टैंग हेड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

■ **तनागलन** : तनागलन रोग में तनों पर लंबे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिंड बनते हैं।

एसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एचएस सहस्रण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोनेब (डाइथेन या इंडोमिथिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाक्विरिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन व 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	15-12-22	10	2-6

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. काम्बोज

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फण्डनाशकों का ही प्रयोग करें

हरिभूमि न्यूज >> हिसार

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे



हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैम हंड कहते हैं। यह बीमारी उपाय पछेती फसल में अधिक होती है।

से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के गूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाव ने सफेद फंगस की तरह बन जाती है। वे लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी बजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग निरोधक डॉ. एच.एस. सहरण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुरिया और सफेद रतुआ बीमारियों के लक्षण कमजोर जाते ही 600 ग्राम मैकोजेब (डब्ल्यू.ए. इंडोफिल एन 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिनों के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम बासिडिल प्रति किलोग्राम बीज के टिकाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजई के 45 से 50 दिनों तथा 65 से 70 दिनों के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

सहायक होती है। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डा. जी. ट. सभाना 12	15-12-22	5	4-6

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी: बी.आर. काम्बोज

हिसार, 14 दिसंबर (विश्वेन्द्र वर्मा): सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों कर्पाय फसलों के सहित तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेली व पछेली सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव संधिकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में



सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण
अल्टरनेरिया ब्लाइट
: कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू : इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों

का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैंग हेड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेली फसल में अधिक होती है।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम
: पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

द. लो. हि. सा. 2

दिनांक

15.12.2022

पृष्ठ संख्या

कॉलम

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व



मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव

सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य विमारी और उनके लक्षण

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पान्च कृषि	14.12.2022	-----	-----

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. काम्बोज

घण्ट बज्जे म्यूज

हिसार। सरसों खेती में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों बनीय फसलों के लहत लौरिच, राया, रायागौरा, धुरी व गौरी सरसों आते हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवड़ी, मोन्दपट्ट, हिसार, फतेहगढ़, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उत्पादक कम खर्च में अधिक लाभ कम रहे हैं। विभिन्न सरसों की बीमारियों की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विनाशविध्वंसक के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अनेक व फंसी सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रयोग हो सकता है, जिनकी विवेकपूर्ण पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार इकट्ठा कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम

के लिए किए जाने वाले विभिन्न तरीके सावधानता के 3 बज्जे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रयोग होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज इकट्ठा करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर इनकी रोकथाम के लिए विभिन्न विनाशविध्वंसक द्वारा रिजिस्टर्ड किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारियों का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारियाँ और इनके लक्षण
अप्टरनेरिया ब्लाइट
कृषि महाविद्यालय के अधिपति डॉ.



एस.के. पाण्डे ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व पत्तियों पर गोल व धुरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग बसता हो जाता है और पत्तों पर गोल छल्ले दिखाई देने लगते हैं।

फुलिया या झड़नी फिल्लू

इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर धुरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर सूनें सा बन जाता है।

सफेद रातुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और छोटी रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेहद आकार के हो

जाते हैं जिसे लीफ हेड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा फंसी फसल में अधिक होती है।

तनामलन

तनामलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के धुरे रंग जल जल धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये

लम्बे पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर फलने रोग के विषय बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभाग अध्यक्ष डॉ. एच.एन. स्वरूप के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रातुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैक्रोबेज (कॉम्पेन या इंडोक्सील एच 45) को 250 से 300 लीटर पानी में घिसाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना मलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डिमिथ (बिथीरिडन) प्रति किलोग्राम बीज के विलयन से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना मलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिनाई के 45 से 50 दिन तक 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डिमिथ का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	14.12.2022	-----	-----

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

समस्त हरियाणा न्यूज
हिसार। सरसों रबी में उपार्ज जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वार्षिक फसलों के तहत तौरिका, रण, सायमांत, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, चिरसा, पिबारी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका खतरनाकी से रोकथाम कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. कामथोज ने बताया कि अंगुली व पंखेरी सरसों की फसल में बड़े प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से

अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों को रोकथाम के लिए किए जाने वाले डिफ़ेंसिव संदेव कार्यक्रम को 3 बचे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिरुवन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छे उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण : अल्टरनेरिया ब्लाइट : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पट्टनायक ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी

है। इस बीमारी में बींधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छेद दिखाए देने लगते हैं। फुलिया या झाड़नी मिल्डू : इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है। सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और भ्रूम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे राने व फूल बेडोंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टींग इट कहते हैं। तनागलन: तनागलन रोग में तनों पर सन्धे आकार के भूरे जल तटित धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व तहनियों पर भी नजर आ सकते हैं। तनों के

भीतर बगले रंग के लिह बनते हैं। ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम : पादप रोग विभागध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहाय के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैक्डेनेब (खाद्येन या इंडोमिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार डिफ़ेंसिव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बोर्डीरिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिस्से से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिनाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार डिफ़ेंसिव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
413 5 पक्ष	14.12.2022	-----	-----

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 14 दिसम्बर : सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।



करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण
अल्टरनेरिया ब्लाइट
कृषि महाविद्यालय के

अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू

इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेहंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टेग हैड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये

लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जम-द्वार	14.12.2022	-----	-----

किसान सरसों की बीमारी की समय रहते रोकथाम कर सकते हैं : कुलपति

नम-छोर न्यूज 14 दिसंबर

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। प्रदेश में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती हैं। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल को यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू : इस बीमारी में

पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेढंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हेड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन : तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।